भूमिका

जीवन और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है। इसी धारणा पर मैंने गोपाल चतुर्वेदी की व्यंग्य रचनाएँ पढ़ी तो भावना और दृढ़ हो गयी कि व्यंग्य मानव जीवन के बिल्कुल करीब है। व्यंग्य संवेदनशील एवं सत्यनिष्ट मन द्वारा विसंगतियों पर कि गयी प्रतिक्रिया है। अतः जीवन में विसंगतियों, विकृतियों, विद्रूपताओं का एहसास ही व्यंग्य को जन्म देता है। यह भी ज़रूरी है कि व्यंग्यकार का स्वयं का जीवन भी आदर्शों और नैतिक मूल्यों की कसोटी पर खरा हो। एक व्यंग्यकार जब समाज की स्वयं से तुलना करता है तो जहां उसे हल्कापन दिखता है वहां उस पक्ष पर वह व्यंग्य करता है । यदि वह स्वयं को भी नैतिकता और आदर्शों से परे पाता है तो आत्मव्यंग्य भी करता है। वास्तव में एक सफल व्यंग्यकार वही है जो बेईमानी, आडम्बरों और विसंगतियों पर तीखा प्रहार कर सके, चाहे ये बेईमानी, आडम्बर और विसंगतियां स्वयं की ही क्यों न हो। गोपाल चतुर्वेदी का लेखन ऐसा ही है। उनके लेखन में यथार्थवादी मान्यताएं स्पष्ट हैं और उनके व्यंग्य समाज में व्याप्त विसंगतियों का दर्पण है, अतः इसी कारण मैंने उनके व्यंग्यों को अपने विषय के रूप में चुना।

हिंदी साहित्य में व्यंग्य एक शैली है, व्यंग्य एक अभिव्यक्ति प्रणाली है, आदि बातें आलोचक कहते आ रहें हैं। किन्तु आज हिंदी में व्यंग्य एक आधुनिक विधा है। स्वतान्त्र्योत्तर काल के अनेक वैशिष्ट्यों में व्यंग्य का विधा के रूप में उदित होना सार्थक एवं सायुक्तिक है।व्यंग्य समाज की विकृत स्थितियों को जितनी स्पष्टता से प्रकट करता है। उतनी साहित्य कि अन्य विधाएँ नहीं कर पातीं। इसीलिए व्यंग्य आज लोकप्रिय हो रहा है।

आज हर पुराने के स्थान पर नए की स्थापना के प्रयास हो रहे हैं। जीवन से सम्बद्ध पुरानी मान्यताएं, परम्पराएँ, मूल्य आदि का विघटन हो रहा है अतः आधुनिक समाज में विसंगतियां उभरती हुई

दिखाई देती हैं। आज का मनुष्य अत्यधिक अशांत है, इसलिए उसे केवल कल्पनात्मक साहित्य ही पसंद नहीं आता। वह साहित्य में कल्पना के स्थान पर सामाजिकता सच्चाई को देखना चाहते हैं और व्यंग्य सामाजिक सच्चाई को सामने लाने का एक अच्छा माध्यम है। व्यंग्य सामाजिक विसंगति ही नहीं मनुष्य के दोषों को भी उसके समक्ष प्रस्तुत करता है। अतः मनुष्य के अन्दर तिलमिलाहट पैदा करते व्यंग्य जन और समाज से विसंगतियों को दूर करने का प्रयास करता है। इसी कारण व्यंग्य का जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

व्यंग्य-लेखन की परम्परा की प्राथमिक कड़ी कबीर को माना जा सकता है। हिंदी गद्य में व्यंग्य लेखन 'अंधेर नगरी' और 'शिवशम्भू के चिट्ठे' से शुरू होता है। किन्तु हिंदी व्यंग्य-लेखन का जो परिष्कृत रूप आज हमारे सामने है उसके पीछे हरिशंकर परसाई, शरद जोशी और रवीन्द्रनाथ त्यागी जैसे व्यंग्यकारों का विशेष एवं महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिंदी में व्यंग्य ने साहित्य की सभी विधाओं में प्रायः अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, किन्तु इसे साहित्य में विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी इन व्यंग्यकार त्रयी को जाता है। इसके पश्चात् बरसाने लाल चतुर्वेदी, लतीफ़ घोंघी, नरेन्द्र कोहली, अशोक चक्रधर, कन्हैयालाल नंदन, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेमजन्मेजय, अश्विनी कुमार दुबे, जवाहर चौधरी आदि ने भी व्यंग्य विधा को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

व्यंग्य को विधा के रूप में स्थापित करने एवं समृद्ध बनाने की इस परम्परा में गोपाल चतुर्वेदी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है ।इनके व्यंग्य समाज में विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को आईना दिखाते नज़र आते हैं। अतः मैंने ''गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य-लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन'' इस विषय को अपने शोध-प्रबंध के लिए चुना।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम अध्याय का विषय है, हिंदी'व्यंग्य का उद्भव एवं विकास'। इसमें व्यंग्य के अर्थ एवं स्वरूप के अंतर्गत व्यंग्य के शाब्दिक तथा पारिभाषिक अर्थ, हास्य की परिभाषा, हास्य और व्यंग्य में सम्बन्ध तथा अंतर्विभेद तथा हिंदी में व्यंग्य परम्परा आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय का सम्बन्ध गोपाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से है। इसमें गोपाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, उन्हें प्राप्त पुरस्कारों के साथ ही साथ उनकी रचनाओं के सारांश को बताने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय में गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्यों में राजनीतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार का उद्घाटन के अंतर्गत राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों एवं भ्रष्टाचारों को व्यंग्यकार ने किस रूप में देखा है और इसके प्रति उसकी क्या प्रतिक्रिया रही है, इसका अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय का विषय है 'गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्यों में सामाजिक चेतना' इसमें उनकी सामाजिक दृष्टि और वातावरणीय सजगता का विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय में 'शैली' के अर्थ को बताते हुए , व्यंग्य विधा में शैली के महत्त्व को दिखाते हुए, गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्यों में प्रयुक्त शैली को उदहारण के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार इस शोध प्रबंध में गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य-लेखन को समझाते हुए अन्य व्यंग्यकारों को उनके समक्ष रखते हुए, उनके व्यंग्यों का आलोचनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। साथ ही आज के दौर में व्यंग्य विधा की प्रासंगिकता पर भी समकालीन परिस्तिथियों के परिपेक्ष्य में विचार करने का प्रयास किया गया है।

इस शोध-कार्य में मुझे प्रवृत्त करने का श्रेय डॉ० कमला नन्द झा को है, जिन्होंने मुझे इस विषय को अपने शोध-विषय के रूप में चुनने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रति मैं अपनी अथाह श्रद्धा ज्ञापित करती हूँ। उनके विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन से ही मेरा यह शोधकार्य पूरा हो सका है।

प्रो० रामनरेश मिश्र के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे इस शोधकार्य को व्यवस्थित रूप में आरंभ करने के लिए मुझे प्रेरित किया।

मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ० अरविन्द सिंह तेजावत का विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल एवं बहुमूल्य निर्देशन में मेरा यह शोध-कार्य पूरा हो सका है । डॉ० सिद्धार्थ शंकर राय का भी आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिन्होंने शोध में अपेक्षित सहायता और मार्गदर्शन तो दिया ही इसके साथ ही कठिन परिस्थितियों में मेरा संबल भी बढ़ाया। डॉ० अमित कुमार की सहजता मुझे हमेशा ही प्रभावित करती रही है, उनका भी निर्देश मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करता रहा है, मैं उनकी भी आभारी हूँ।

मैं गोपाल चतुर्वेदी जी की भी विशेष आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपनी साहित्यिक रचनाओं पर शोध-कार्य करने कि अनुमति तो प्रदान की ही साथ ही साथ समय-समय पर अपेक्षित सहयोग भी प्रदान करते रहे।

मैं अपने माता-पिता, सास-ससुर एवं भाई-बहनों का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने हर कदम पर मुझे सहयोग प्रदान किया।

मेरे इस शोध-कार्य को पूर्ण करने में मेरे मित्रों रतनलाल जी, रहीश भाई, रीना दी, छोटी मनीषा, निर्मल दी, लीलाराम भैयाजी, प्रेम, मनीषा, दीपक, मनोज, प्रवेश, सरस्वती, शिवशंकर, विभु, प्रदीप, उमा, विभव आदि का विशेष योगदान रहा है। इन सबका आभार व्यक्त करना मेरी धृष्टता ही होगी। भविष्य के लिए इन सबको ढेर सारा प्यार और शुभकामनाएँ।

इस शोध-कार्य को पूर्ण करने में इन्द्रजीत से मुझे बहुत सहयोग मिला, मेरे बेटे रूद्र और इनके कारण ही मैं इस शोध-कार्य में प्रवृत्त होकर उसे पूर्ण कर सकी हूँ। इनका आभार व्यक्त करके मैं इनके कद को छोटा नहीं करना चाहती। मेरे बेटे रूद्र का त्याग मेरे इस शोध-कार्य की रीढ़ है। उसके लिए कुछ भी कहने का साहस और शब्द मेरे पास नहीं हैं।

पारुल यादव